वर्ष 25, अंक 4 Sr. 431, मुंबई, अप्रेल 2026, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

।। श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ।।

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं
उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

सुमेरपुर में सौभाग्य सुंदर नवपद महोत्सव

प्रतिदिन प्रेरणादायी प्रवचन

मंत्री जोरारामजी कुमावत द्वारा अक्षत वधामणा

पूज्यश्री को वंदन करते भूतपूर्व विधायक संयमजी लोढा

हृदय प्रदीप भाग-1-2 पुस्तक का भव्य विमोचन

-: संपादक एवं प्रकाशक :-
सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे,
डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.
M. 84 84 84 84 51 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

स्वर्णिम-अवसर

सर्व विरति स्वर्ण वर्ष
२०३३-२०८३
आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, सरस्वती नंदन,
पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
के संयम **सुवर्ण वर्ष की पूर्णाहूति** की अनुमोदनार्थ
ई.सन. 2027 में शत्रुंजय महातीर्थ की धन्य धरा पर
कस्तुर धाम-वैयावच्च धाम के प्रांगण में
लगभग 500 आराधकों का 50 दिवसीय

चातुर्मासिक-आराधना एवं महा मंगलकारी उपधान तप का भव्य आयोजन

चातुर्मास एवं उपधान तप के सामूहिक आयोजन में
अपनी नश्वर संपत्ति का सद्व्यय करने के लिए
आधार स्तंभ, रत्न स्तंभ व सुवर्ण स्तंभ
की योजनाएं है ।

इच्छुक महानुभाव निम्न Contact No. पर संपर्क करें ।

रणजीतभाई राठोड
9819079966

भरतभाई कोठारी
9820684775

भरतभाई छाजेड
9820557734

किरणजी चोपडा
8600100765

प्रकाश बडोल्ला
8971230600

रत्न संदेश

लेखक :-
प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

527 सुख की परीक्षा

आदमी हर चीज की परीक्षा करता है । नकली छोड़कर असली पसंद करता है, जब कि आश्चर्य है कि सुख के विषय में गुमराह हो जाता है, आत्मिक और आध्यात्मिक वास्तविक सुख के बजाय वह शारीरिक और भौतिक नाशवंत और क्षणिक सुख को ही सच्चा सुख मान लेता है और उसी को पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है ।

528 भावों की पुष्टि

मोक्ष औप मौत को हमेशा याद करो । मोक्ष की स्मृति से संवेग भाव की पुष्टि होगी और मौत की स्मृति से निर्वेद भाव की पुष्टि होगी । संवेग और निर्वेद भाव के स्पर्श बिना आत्मा में सम्यक्त्व के परिणामों का स्पर्श नहीं हो पाता है । सम्यक्त्व के अभाव में की गई आराधना विशेष फलदायी नहीं होती है ।

जनवरी 2026 से दिसंबर 2026 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **एक सद्गृहस्थ-**कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **मातुश्री शांतिबेन पुखराजजी उमाजी करमाजी भंदर-**शांतिकमल-मुंबई
- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से **अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता** मुंडारा-बोरीवली
- **ओटीबाई वालचंदजी, चाहत विनीतजी बोकरिया** विक्रोली (वे), खिमेल (राज.)

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)
विहार में संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942

ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक,
निःस्पृह शिरोमणि, प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर

श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

संपादक : जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज

4

वाचनाओं के कतिपय अंश

–वाचना दाता : पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.

लोगपईवाणं ।

❖ अंधेरे में टकराते हुए हमारे लिए प्रभु-वचन प्रकाश बनते हैं । जिन-वचन प्रकाशरूप तब लगते हैं, जब हम स्वयं अंधेरे में टकरा रहे हैं, ऐसा लगे ।

तीर्थ रहे तब तक प्रभु-वचन प्रकाश देते रहेंगे । भोजनशाला का स्थापक भले मृत्यु पा जाय, फिर भी जब तक भोजनशाला चलेगी वहां तक वह स्थापक की गिनी जाती हैं ।

❖ आज भगवती में ऐसा पाठ मिला, जिसे मैं बरसों से ढूंढ रहा था । पू.पं. भद्रंकर वि. महाराज ने खास कहा था : पंचास्तिकाय परस्पर सहायक बनते हैं ऐसा कोई पाठ मिले तो ढूंढीए । आज वैसा ही पाठ मिला हैं ।

परस्पर उपकार करना, यह तो धर्म हैं । उपकार नहीं करना यह अपराध हैं । इस अपराध की ही सजा के रूप में ही हमें दुःखमय संसार मिला हैं ।

❖ प्रकाश का थोड़ा भी सहारा मिलने पर अंधेरे में घाट में पड़ते बच जाते हैं ।

प्रकाश का यह थोड़ा उपकार हैं ?

भगवान श्रुतज्ञान से प्रकाश करते हैं, ऐसा नहीं कहते, यहां तो कहते हैं : भगवान स्वयं ही जगत के दीपक हैं । **लोगपईवाणं ।**

❖ भगवान कभी हमको नहीं भूलते, हम भगवान को भूल गये हैं । उसे याद करना हैं । भगवान हमें भूल गये हैं, वह भ्रम हैं । इस भ्रम को तोड़ना रहा ।

❖ उमास्वाति म. आधारपाठ के बिना कभी लिखते ही नहीं । उन्होंने ही **'परोस्परोपग्रहो जीवानाम् ।'** लिखा । उसका आधार होना ही चाहिए । इसका मूल भगवतीके 461 वें आज के सूत्र में आप देख सकते हो ।

जीव, जीवास्तिकाय को क्या मदद करता हैं ?

आकाश सभी को जगह देता हैं । जीव जीवास्तिकाय को अनंत मतिज्ञान-श्रुतज्ञानके पर्याय देता हैं । (दूसरा शतक, अस्तिकाय उद्देशके सभी पाठ यहां जोड़ दें ।)

जीव का लक्षण ही उपयोगमय हैं । **'उपयोगो लक्षणम् ।'** इसका आधार यहां हैं । जिसका उपयोग हो, उसका परस्पर उपग्रह होता ही हैं । इसमें सभी जीव आ गये ।

❖ सभी ज्ञान तीर्थंकर से अनंतर या परंपर मिलता हैं । आपको जो ज्ञानादि मिले हैं, वह दूसरो को दें ।

जीव को ही ज्ञान दे सकते हैं, अजीव तो ले ही नहीं सकता ।

दीपक एकांत में छोटीसी जगह पर न रखकर ऐसे स्थान पर रखते हैं कि जिससे उसका प्रकाश सर्वत्र फैलें । दीपक दीपक के लिये नहीं हैं, पदार्थों को प्रकाशित करने के लिए हैं । भगवान जगत के दीपक हैं ।

दीपक किरणों से प्रकाश फैलाता हैं, उसी तरह भगवान देशनारूपी किरणोंसे प्रकाश फैलाते हैं ।

यहां लोक से सम्यग्दृष्टि संज्ञी जीव लेने हैं । देशना की किरण उसे ही प्रकाशित करती हैं, जो सम्यग्दृष्टि संज्ञी जीव होता हैं । गाढ मिथ्यात्ववाले का हृदय भगवान प्रकाशित नहीं कर सकते । उल्लू को सूर्य कुछ बता नहीं सकता । हम यदि घोर मिथ्यात्वी बनकर प्रभु के पास गये हो तो भगवान के वचन हमें कुछ भी कर नहीं सकते । हमारे हृदय का अंधेरा अभेद्य ही रहता हैं । हमने प्रत्येक भवमें ऐसा ही किया हैं ।

जामनगर में व्याख्यान शुरु किये । उसके बाद शंखेश्वर में पू.पं. भद्रंकर वि.म. बगैरह के साथ रहना-प्रवचन देना हुआ । व्याख्यान के बाद पू.पं. भद्रंकर वि. म. को पूछा, 'प्रवचन में कुछ सुधारने जैसा ?'

पू.पं. भद्रंकर महाराजने कहा, व्याख्यान में 'आप' 'आप' के स्थान पर 'हम' शब्द का प्रयोग करना । तथा स्वयं की तरफ से, स्वयं की बुद्धि से कुछ बोलना नहीं ।'

तथा बेडा-लुणावा बगैरह स्थानों में वे प्रवचन में कछ क्षति हो तो कहते । व्यवहार की क्षति हो तो निश्चय की, निश्चय की क्षति हो तो व्यवहार की बात करते ।

मैंने जो भी पुस्तकादि लिखे हैं, उन सभी में आप शास्त्र-पाठ देख सकोगे । अभी तो ऐसा आत्म-विश्वास हो गया हैं कि जो भी मैं बोलता हूं वह शास्त्र सापेक्ष ही होता हैं, शायद अभी शास्त्र पाठ न मिले तो बाद में भी मिल ही जाता हैं ।

मैंने बहुतबार पू. पंन्यासजी म.की तरफ से उपालंभ भी सुना हैं । उन्होंने एकबार कहा था, 'आपको ध्यान-विचार के उपर लिखना अच्छा लगता हैं, किंतु **'परोस्परोपग्रह जीवानाम् ।'** पर क्यों लिखने का मन नहीं होता ?'

लगता है : प्रथम विश्वयुद्ध के बाद आपका जन्म हुआ हैं । आज-कल के जीव ऐसे ही हैं : परोपकारकी बातें उन्हें पसंद ही नहीं आती ।

हमारे प्राण-त्राण भगवान ही हैं । भगवान भले दूर हों, लेकिन आगम से नजदीक हैं । आगम के एक एक अक्षर में भगवान हैं । उसके पारायण से पापकर्मों का क्षय और मंगल की वृद्धि होगी । आखिर हमको यही काम करना हैं न ?

सर्व आगमों का सार नवकार हैं । इस नवकार को कभी मत भूलना । नवकार कहता हैं: आप अगर मेरा स्मरण करते हो तो सर्व पापों का नाश करने की जवाबदारी मेरी हैं । सभी आगम नवकार को केन्द्र में रखकर चारों तरफ प्रदक्षिणा दे रहे हैं । चौदहपूर्वी भी अंत समय में नवकार याद करते हैं । ऐसा महामूल्यवान नवकार मिला हैं उसे भाग्य की पराकाष्ठा समझना ।

संपादन-संशोधन में इतने व्यस्त होने पर भी पू. जंबू वि.म. 20 पक्की माला गिनने के बाद ही पानी वापरते हैं । **यह प्रतिज्ञा देनेवाले पू.पं. भद्रंकर वि.म. थे ।** पू.पं. भद्रंकरविजयजी महाराजने पू. जंबू वि.म. जब अकेले थे (पिता म. स्वर्गवासी हो गये थे ।) तब स्वयं के पास दीक्षा लेने आनेवाले एक भाई को पू. जंबू वि.म. के पास भेजा था ।

❖ व्यापारियों के यहां दो विभाग होते हैं :

खाता और रोकड़ । खाता नवकार हैं । रोकड़ शेष द्वादशांगी । खाते में मात्र टीप ही होती हैं ।

अब मैं पूछता हूं : रोकड़ खो जाय तो नुकसान या खाता खो जाये तो ज्यादा नुकसान ?

इसी तरह नवकार खो जाये तो सब कुछ खो जाता हैं ।

एक नवकार के आधार पर पू.पं. भद्रंकरविजयजी महाराज ने अनेक अगम्य पदार्थों की शोध की और कहा : नवकार से निर्मल बनी हुई प्रज्ञा आपको सब कुछ ढूंढ देगी ।

गणधरों को तो मात्र तीन ही पद भगवान ने दिये थे । वे मातृका हैं । यह खाता हैं । उसके उपर बनाई हुई द्वादशांगी वह रोकड़ हैं ।

❖ चार माता :

(1) वर्ण माता : ज्ञानमाता । अ से ह तक के अक्षर ।

पुराने जमाने में माता की तरह अक्षरों को पूजते थे । गणधरों ने स्वयं ने उसको नमन किया हैं । **'नमो बंभीए लिविए ।'**

अक्षर द्रव्यश्रुत होने पर भी भावश्रुत का कारण हैं ।

(2) नमस्कृति माता (नवकार) : पुण्य की माता ।

विशिष्ट पुण्य पैदा होने से जीव का विकास होता रहता हैं ।

(3) प्रवचन माता (नवकार) : धर्ममाता ।

पुण्य के बाद धर्म का सर्जन होना चाहिए ।

ये सभी धावमाताएं हैं । ये स्वयं का कार्य करके आगे की माता की गोद में हमको भेज देती हैं ।

पहले वर्णमाता आती हैं । वर्णमाता आपको नवकार माता की गोद में, नवकार माता आपको प्रवचन माता की गोद में रखती हैं ।

आज तो आश्चर्य होता हैं । आपके बालक वर्णमाता से वंचित रह जाते हैं । उसको A, B, C, D आती हैं, किंतु अ से ह तक के अक्षर नहीं आते, हमारे पास ऐसे कई बालक आते हैं । यह देख आश्चर्य होता हैं : हमारे ही देश का बालक हमारी भाषा नहीं जानता !

बचपन से ही आप मातृभाषा से अलग हो जाओ तो आप में आर्य-संस्कृति की धारा कैसी उतरेगी ? जो भाषा बचपन से सीखो उसी भाषा की संस्कृति उतरेगी ।

(क्रमशः)

महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा

-: लेखक :-
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

लब्धि निधान श्री गौतमस्वामी

लब्धि के भण्ड़ार

ठीक ही कहा है-

'अंगूठे अमृत बसे, लब्धितणां भंड़ार;
श्रीगुरु गौतम समरीए, वांछित फल दातार ।'

रत्नत्रयी की विशुद्ध आराधना और तप की साधना के फलस्वरूप आत्मा में अनेक प्रकार की लब्धियाँ उत्पन्न होती हैं ।

यद्यपि दुनिया की दृष्टि से इन लब्धियों की सिद्धि व प्राप्ति में एक अपूर्व चमत्कार दिखाई देता है, परन्तु एकमात्र मुक्ति की ही अभिलाषी बनी आत्माओं के लिए उन लब्धियों का कोई विशेष महत्त्व नहीं होता है ।

भौतिकवाद के गर्त में आकंठ डूबी आत्माओं को इन लब्धियों की प्राप्ति में साक्षात् स्वर्ग के दर्शन होते हैं, परन्तु निःस्पृही बनी मोक्षाभिलाषी आत्माओं के मन में उन लब्धियों का कोई विशेष मूल्य नहीं होता हैं ।

भवाभिनंदी आत्माएँ तो उन लब्धियों के पीछे पागलसी हो जाती हैं । उन लब्धियों की प्राप्ति के लिए वे कठोर से कठोर तप व कठिनतम जीवन जीने के लिए भी तैयार हो जाती हैं ।

गेहूँ बोने पर घास उत्पन्न होता है । खेत में खड़ी गेहूँ की फसल में महत्त्व गेहूँ का है, न कि घास का । घास की उत्पत्ति तो गेहूँ के साथ जुड़ी हुई है । जहाँ गेहूँ बोएंगें, वहाँ घास तो उत्पन्न होने ही वाला है । बस, इसी प्रकार जो पुण्यवंत आत्मा निराशंस भाव से एकमात्र मोक्ष को लक्ष्य में रखकर रत्नत्रयी की आराधना करती है, उस आत्मा को उस विशुद्ध साधना के फल रूप मोक्ष की अवश्य

प्राप्ति होती है...और जब तक उस आत्मा का मोक्ष नहीं होता है, तब तक उस आत्मा को इस संसार में सर्वश्रेष्ठ कोटि के भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है अर्थात् वह आत्मा जब तक संसार में रहती है, तब तक सुख की हर प्रकार की सामग्री प्राप्त करती है ।

चरम तीर्थपति सर्वज्ञ-सर्वदर्शी प्रभु महावीर के मुखारविंद से आत्मा की शाश्वतता एवं अनंत सुखमय मोक्ष के स्वरूप के वर्णन–श्रवण के बाद श्री गौतम स्वामी भगवंत मुक्ति के तीव्र अभिलाषी बने थे ।

छट्ठ के पारणे छट्ठ की कठोर तपश्चर्या के साथ-साथ वे रत्नत्रयी की आराधना-साधना में तल्लीन बन गए थे । रत्नत्रयी की विशुद्ध आराधना के फलस्वरूप उनकी आत्मा में अनेक प्रकार की लब्धियाँ उत्पन्न हुईं थी ! तप-धर्म की साधना के प्रभाव से आत्मा में अनेक प्रकार की ऋद्धियाँ व लब्धियाँ प्रकट होती हैं । कतिपय लब्धियों का परिचय इस प्रकार है ।

बुद्धि ऋद्धि : केवलज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, बीज बुद्धि, कोष्ठ बुद्धि आदि अनेक प्रकार हैं ।

1. केवलज्ञानावरणीय कर्म के संपूर्ण क्षय से आत्मा में केवलज्ञान प्रकट होता है ।

2. मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से आत्मा में मनः पर्यवज्ञान प्रकट होता है ।

3. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से आत्मा में अवधिज्ञान प्रकट होता है ।

4. बीज बुद्धि : जिस प्रकार अच्छी तरह से हल चलाई हुई उपजाऊ भूमि में बोए हुए उत्तम बीज में से अनेक बीज पैदा होते हैं, उसी प्रकार श्रुतज्ञानावरण और वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम की प्रकर्षता के कारण एक बीजपद के ग्रहण करने मात्र से ही अनेक पदार्थों का ज्ञान हो जाता है, उसे **बीज बुद्धि** कहते हैं ।

5. कोष्ट बुद्धि : जिस प्रकार भण्ड़ारी के पास अपने भण्ड़ार में अनेक प्रकार के धान्य सुरक्षित रहते हैं, उसी प्रकार परोपदेश से अवधारित बहुत से पदार्थ, ग्रंथ; बीज बुद्धि रूपी कोठे में संगृहीत रहते हैं, उसे **कोष्ट बुद्धि** कहते हैं ।

6. पदानुसारी बुद्धि : आदि, मध्य और अंत के किसी भी एक पद के उच्चारण या श्रवण करने पर संपूर्ण ग्रंथ के अवधारण की शक्ति जिसमें प्रगट होती है, उसे **पदानुसारी बुद्धि** कहते हैं ।

7. संभिन्न श्रोत : संभिन्न अर्थात् प्रत्येक । इस लब्धिवाला सिर्फ कान से ही नहीं, शरीर के किसी भी अंग से सुनने में समर्थ होता है । सभी इन्द्रियाँ एक दूसरे की इन्द्रिय का काम करने में समर्थ होती है । उदा. आँख से देख भी सकते है और सुन भी सकते है ।

8. दूरास्वाद समर्थता : तप की शक्ति के प्रभाव से उत्पन्न रसनेन्द्रिय श्रुत ज्ञानावरण व वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम व अंगोपांग नाम कर्म के उदय से नौ योजन से भी दूर रहे रस का आस्वादन करने का जिसमें सामर्थ्य हो उसे **दूरास्वादसमर्थता ऋद्धि** कहते हैं ।

9.10.11.12. दूरघ्राण-विलोकन-स्पर्श-श्रवणसमर्थता : तप कर्म के प्रभाव से आत्मा में ऐसी शक्ति प्राप्त होती है कि दूर रहे क्षेत्र में रही गंध, रूप, स्पर्श व शब्द को आसानी से ग्रहण कर सकते है।

क्रियाविषयक ऋद्धि दो प्रकार की है–

1. चारण ऋद्धि : इसके भी अनेक प्रकार हैं। बावड़ी, नदी आदि में जल का सहारा लेकर, अप्काय के जीवों की विराधना नहीं करते हुए भूमि के समान जल में पैरों को उठाने व रखने की कुशलता को **जलचारण ऋद्धि** कहते हैं।

भूमि से चार अंगुल ऊपर आकाश में जंघा के उत्क्षेपण व निक्षेपण करने में चतुर व तीव्र गति से गमन करने की पटुता को **जंघाचारण ऋद्धि** कहते हैं।

तंतु, पुष्प, पत्र, अग्निशिखा आदि का आलंबन लेकर आकाश में गमन करने को **तंतुचारण ऋद्धि** कहते हैं।

2. आकाशगामित्व : पैरों को ऊँचा-नीचा किए बिना पद्मासन अथवा कायोत्सर्ग में आकाश में गमन करने को **आकाशगामित्व ऋद्धि** कहते हैं।

विक्रिया विषयक ऋद्धि अनेक प्रकार की है

1. अणिमा : अणु के समान शरीर बनाने की इसमें शक्ति रही होती है, जो कमल के तंतु के छिद्र में भी आसानी से प्रवेश कर सकता है।

2. महिमा : मेरु पर्वत से भी बड़े शरीर की रचना करने का सामर्थ्य इसमें होता है।

3. लघिमा : वायु से भी हल्का शरीर बनाने का सामर्थ्य होता है।

4. गरिमा : वज्र से भी अधिक भारी शरीर बनाने का सामर्थ्य होता है।

5. प्राप्ति : भूमि पर बैठकर अंगुली के अग्र भाग से मेरु शिखर या सूर्य-चन्द्रमा आदि का स्पर्श करने का सामर्थ्य इस ऋद्धि में होता है।

6. प्राकाम्य : पानी में भूमि के समान और भूमि में जल के समान उन्मज्जन-निमज्जन करने का सामर्थ्य इस ऋद्धि में होता है।

7. ईशित्व : तीन लोक की प्रभुता रचने का सामर्थ्य इस ऋद्धि में होता है।

8. वशित्व : सभी को वश करने का सामर्थ्य सामर्थ्य प्राप्त होता है।

9. अन्तर्धान : इस लब्धि से अदृश्य होने का बल प्राप्त होता है।

10. अप्रतिघात : पर्वत के मध्य भाग में आकाश के समान गमनागमन करना या पर्वत में घुस जाना **अप्रतिघात** ऋद्धि है।

11. कामरूपित्व : एक साथ इच्छानुसार अनेक रूप बनाने की ऋद्धि को **कामरूपित्व** कहते हैं।

बलऋद्धि के तीन प्रकार हैं

1. मनोबली-ऋद्धि : श्रुतावरण व वीर्यांतराय कर्म का विशिष्ट क्षयोपशम होने से अन्तर्मुहूर्त काल में सकल श्रुत के अर्थ का चिंतन करने का सामर्थ्य जिसमें हो उसे **मनोबली ऋद्धि** कहते हैं ।

2. वचनबल ऋद्धि : मन और रसना से श्रुतावरण के क्षयोपशम से अन्तर्मुहूर्त में सकल श्रुत का उच्चारण करने का सामर्थ्य हो उसे **वचनबल ऋद्धि** कहते हैं ।

3. कायबल ऋद्धि : वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न असाधारण कायिक शक्ति के कारण जो एक मास, चार मास और संवत्सर तक प्रतिमा योग (काउस्सग्ग) धारण करने पर भी थकावट का अनुभव नहीं करता हैं, उसे **कायबल ऋद्धि** कहते हैं ।

औषध ऋद्धि के आठ प्रकार हैं-

1. आमर्षौषधि ऋद्धि : जिस ऋद्धि के प्रभाव से हाथ का स्पर्श करने मात्र से ही भयंकर व्याधियाँ शांत हो जाती हैं, उसे आमर्षौषधि-ऋद्धि कहते हैं ।

2. खेलऔषधि ऋद्धि : इस ऋद्धि के धारक का थूंक, कफ तथा श्लेष्म (नाक का मैल) भी औषध रूप बन जाता है ।

3. जल्लौषधि ऋद्धि : पसीने के कारण शरीर पर चिपके हुए रज को जल्ल कहते हैं । जिनके जल्ल के स्पर्श से रोग नष्ट हो जाए, उसे जल्लौषधि ऋद्धि कहते हैं ।

4. मल्लौषधि ऋद्धि : कान, नाक, दाँत व आँख में उत्पन्न मल भी औषध का काम करे उसे **मल्लौषधि ऋद्धि** कहते हैं ।

5. विप्रुट् औषधि ऋद्धि : जिनके मल-मूत्र भी औषध रूप बन जाए उसे विप्रुट् औषधि-ऋद्धि कहते हैं ।

6. सर्वौषधि ऋद्धि : जिनके अंग, उपांग, नख, दाँत आदि सभी अवयवों का स्पर्श रोगनाश का कारण बन जाए उसे सर्वौषधि ऋद्धि कहते हैं ।

7. मुखनिर्विष ऋद्धि : उग्र विष मिश्रित आहार भी जिनके मुख में जाने से निर्विष बन जाता है उसे मुखनिर्विष ऋद्धि कहते हैं ।

8. दृष्टिनिर्विष ऋद्धि : जिनके देखने मात्र से ही तीव्र विष भी दूर हो जाता है, उसे दृष्टिनिर्विष ऋद्धि कहते हैं ।

रसऋद्धि के छह प्रकार हैं

1. आशीविष : जिस लब्धि से **'मर जाओ'** इतना कहने पर सामनेवाला व्यक्ति मर जाता है उसे आशीविष ऋद्धि कहते हैं ।

2. दृष्टिविष : जिस लब्धि के प्रभाव से जिसके ऊपर दृष्टि करे वह तुरंत ही मर जाता है, उसे दृष्टिविष ऋद्धि कहते हैं ।

(क्रमशः)

प्रेरक कहानियाँ

लेखक :
प.पू.आचार्यदेव
श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

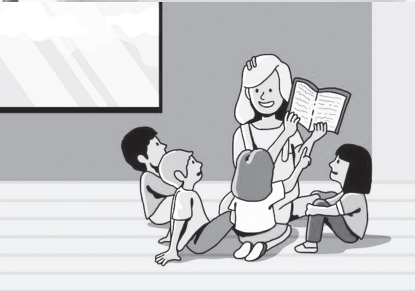

186. दृष्टिकोण का भेद

एक यात्रिक के पास बहुत ही सुंदर घोडा था ! अत्यंत ही आकर्षक होने से लोग खरीदने के लिए मांगते ! परन्तु घोडे के प्रेम के कारण वह सभी को मना करता था ! लोग ताक में थे कि यह घोडा कब मिल जाय ।

रात्रि में घोडे को वृक्ष से बांधकर वह सो गया, रात्रि में घोड़ा चोरी हो गया । घोडा नहीं मिला ! सुबह भीड़ हो गई, वह भागा बाजार की ओर और मिठाई लाकर बांटने लगा और भगवान् को धन्यवाद देने लगा ।

लोगों को आश्चर्य हुआ । पूछने पर उसने कहा-'यह क्या भगवान की कम कृपा है कि मैं घोडे पर बैठा नहीं था, जमीन पर सोया था, अन्यथा मुझे भी उठाकर ले जातें अथवा उन्होंने मुझे जिंदा तो छोड़ दिया है ।

187. लोक-प्रवाह कैसा है ?

एक दिन एक संन्यासी ने पूरे जंगल के पशुओं को भागते हुए देखा मानों भूकंप आ गया हो ! सन्यासी ने किसी को रोककर पुछना चाहा, परन्तु रुके कौन ? सभी भागते ही जा रहे थे, थोडा-सा रोकने पर कहते, **'आगे वाला जानता है । सभी यह जवाब देते, अंत में शेर-सिंह सभी को भागते देखा !'**

आगे एक खरगोश था उसको रोककर पूछा तो कहा–महाप्रलय होने वाला है । संन्यासी तुझे किसने कहाँ ?

उसने कहा, मैं वृक्ष के नीचे सो रहा था और कोई जोर सी आवाज हुई, मेरी माँ ने कहा था कि जब ऐसी आवाज होती है तो महाप्रलय आता है । संन्यासी ने वृक्ष पूछा और उसने आम्रवृक्ष बताया ।

संन्यासी ने कहा, **'कोई आम तो नहीं गिरा था ?'**

उसने कहा हो सकता है, उसी समय आम गिरा और बोला, **'हाँ ! एसी ही आवाज थी ।'**

188. विद्युत क्या है ? No Answer

अमेरिका के एक छोटे से गांव की स्कूल में विद्यार्थियों की विज्ञान-प्रदर्शनी में विद्युत चालक अनेक छोटे बडे यंत्र बनाये थे । एक अजनबी बुढे ने प्रदर्शनी देखकर बच्चे से प्रश्न किया, **'विद्युत क्या है ?'** What is Electricity ? बच्चें बिजली के कार्य को समझा सकते थे, परन्तु यह प्रश्न सुनकर वे भी मुश्किल में पड़ गये ! उन्होने कहा, **'बिजली ये काम करती है, परन्तु वह भी 'क्या' का जवाब न दे सका, फिर विज्ञान के डॉक्टर को बुलाया वह भी जवाब न दे सका ।**

तब बुढे ने कहा-इस मामले में हम सब बराबर है ! क्योंकि इस मामले को अभी तक कोई जान न पाया ! मालूम है मै कौन हूँ ? मै एडीसन हूँ 1 हजार आविष्कार करने वाला अमेरिका का सबसे बड़ा

वैज्ञानिक हूँ !' बिजली के स्वरुप की तरह परमात्मा के स्वरुप को भी व्यक्त नहीं कर सकते है परन्तु वह भी अनुभव गम्य है ।

189. कुतूहल प्रिय आदमी

न्युयार्क शहर में एक व्यक्ति के पास बहुत बड़ा अजायबघर था, उसमें प्रवेश की फीस थी और मर्यादित व्यक्ति ही अंदर जा सकते थे । अजायब घर में इतना आकर्षण था कि पुन: व्यक्ति बाहर निकलना नहीं चाहता था । घंटो तक व्यक्ति देखता ही रहता, जिससे बाहर लोगों की बडी भीड रहती !

अब उस मालिक ने एक युक्ति सोची, उस अजायब घर में 12 कमरें थे, सभी पर उसने आगे-आगे का तीर का निशान किया और लिखा और भी अद्भुत चीजें है । और अंतिम द्वार जो रोड पर बाहर निकलता था उस पर लिखा **'अति अद्भुत चीजें है ।'**

इस अद्भूतता के कुतूहल के कारण व्यक्ति उसमें शीघ्र प्रवेश करता और व्यक्ति रोड पर बाहर आ जाता था, फिर वह अति भीड नहीं हुई ।'

190. ममत्व ही बंधन है

एक संन्यासी ने अपने शिष्य को ज्ञान देने के लिए एक राजमहल में भेजा । वहां राजाशाही ठाठ था । उसे संदेह हुआ कि यहां क्या ज्ञान मिलेगा ? राजा के आग्रह से सन्यासी ठहरा ! राजा बहुत ही धार्मिक वृत्तिवाला था ! सुबह दोनो गंगा स्नान के लिए गये ! राजा और संन्यासी दोनों स्नान कर रहे थे ।

उसी समय समाचार मिलें कि महल में आग लग गई है और आग जोर से चारों और फैल रही है । घाट पर रखे हुए अपने कपडे लेने के लिए संन्यासी भागा, जब कि वहां तक आग आने में देरी थी ।

राजा को गंगा में न हाते देख संन्यासी शर्मा गया ।

संन्यासी ने कहा, 'आप क्यों नही भागे ?'

उसने कहा, 'मैंने कभी महल को अपना समझा ही नही ! मैं मैं हूँ और महल-महल है । मै हूँ तब भी महल है और चला जाऊंगा तो भी, उसको कुछ फर्क पडने वाला नहीं है ? सन्यासी अपने ममत्व भाव को पहिचान गया ।

191. युक्ति का जवाब युक्ति से

एक बालक मंदिर में दीपक जला रहा था ! ज्योति प्रकट हुई ! एक व्यक्ति ने उसे पूछा, **'उसे दीयें में ज्योति कहा से आई !'** बालक जवाब न दे सका । उसने कहा–तूं ने ही तो यह जलाया है, फिर भी खबर नहीं ?

बालक ने तुरंत फूंक मारकर दीपक को बुझा दिया और पूछा, **'बताओ ! ज्योति कहाँ गई ?'** आपके सामने ही तो गई है न !

व्यक्ति कुछ भी जवाब न दे सका । आप भी तो जब जवाब देने में समर्थ नहीं है तो पूछने के क्या अधिकारी है ?

समता से परम सुख प्राप्ति

वैराग्य दीप हृदय प्रदीप

लेखांक-36

विवेचनकार :– **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

नवोदित लेखक :– **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

शम-सुख-रस-लेशाद् द्वेष्यतां सम्प्रयाता ।
विविधविषयभोगाऽत्यन्तवाञ्छाविशेषाः ।
परमसुखमिदं यद् भुज्यतेऽन्त समाधौ,
मनसि यदि तदा ते शिष्यते किं वदान्यत् ।।36।। (मालिनी)

शब्दार्थ

शम-सुख-रस-लेशाद् =समता सुख के आशिक आस्वाद से, **द्वेष्यतां**=शत्रु तुल्यभाव को, **सम्प्रयाता**=प्राप्त हुई है, **विविधविषयभोगाऽत्यंतवाञ्छविशेषाः**= पांच इन्द्रियों के विविध प्रकार के विषय भोग की अति तृष्णा विशेष, **परम सुखं**=मोक्ष तुल्य श्रेष्ठ सुख को, **इदं**=यह, **यद्**=जो, **भुज्यते**=अनुभव करते है, **अन्त समाधौ**=अंतरंग समाधि, **मनसि**=मन में, **यदि**=जो, **तदा**=तब, **ते**=तुम्हें, **शिष्यते**=बाकी रहा है, **किं**=क्या, **वद**=बोलो, **अन्यत्**=दूसरा ।

गाथार्थ

हे जीवात्मा ! अनेक प्रकार के पांच इन्द्रियों के विषयों को भोग करने की मन में जो उत्कट इच्छा थी वह, समता सुख के आंशिक आस्वाद से सांसारिक दुःख को बढाने के कारण शत्रु तुल्य लगती है । यदि अंतरंग समाधि से युक्त मन में मोक्ष तुल्य श्रेष्ट सुख का अनुभव होता तो बोलो, तुम्हें अन्य कौन-से सुख का अनुभव करना बाकी रहता है ?

विवेचन

ग्रंथ के प्रारंभ की तरह ग्रंथ की समाप्ति भी खुब महत्त्वपूर्ण होती है । ग्रंथ का निष्कर्ष उसके अंत में बताया जाता है । जैसे रेलगाडी में ड्रायवर सबसे आगे और गार्ड सबसे पीछे रहता है । गार्ड का स्थान भले ही पीछे हो, परंतु ड्रायवर भी गाडी को गार्ड के ईशारे पर ही चलाता है । वैसे ही प्रस्तुत 36 श्लोक

वाले इस छोटे लेकिन मार्मिक ग्रंथ का यह अंतिम श्लोक गार्ड के स्थान पर है । इस श्लोक के द्वारा ग्रंथकारश्री सभी साधना द्वारा प्राप्त करने योग्य लक्ष्य का निर्देश कर रहे है । **वे कहे रहे है-जब क्षणभर के लिए भी समता सुख का आस्वाद होता है, तब परिणाम में दु:खदायी भौतिक सुखों की भोगेच्छा पर द्वेष पैदा होता है और मोक्ष के आस्वाद समान मन में परम सुख प्राप्त होता है तब तुम्हें अन्य किसी भी सुख के पीछे दौडने की आवश्यकता नहीं है । यह समता का सुख ही मोक्ष प्राप्त कराने वाला है ।**

आत्मा का मूल स्वरुप है ''**सच्चिदानंद**'' । सत् अर्थात् शाश्वत, **चिद्** अर्थात् ज्ञानमय और **आनंद** अर्थात् सुखमय । जगत्वर्ती सभी आत्माओं का शुद्ध स्वरुप ''**सच्चिदानंद**'' है । इस शुद्ध स्वरुप की प्राप्ति मोक्ष में है ।

यह शुद्ध स्वभाव सभी आत्मा में रहा हुआ है । प्रत्येक आत्मा के असंख्य आत्म प्रदेश होते हैं । इनमें से मात्र आठ आत्मप्रदेश सभी आत्माओं के निर्मल है । इन्हें आठ रुचक प्रदेश कहते हैं । इन आठ रुचक प्रदेशों पर कभी कर्मों का लेप नहीं लगता है । इस अपेक्षा से चाहे भव्यात्मा हो या अभव्यात्मा हो, सभी में केवलज्ञान, केवलदर्शन, वीतरागता, अनंतवीर्य आदि गुण सत्ता में रहे हुए है । **फर्क सिर्फ इतना है कि अभव्यात्मा को यह स्वरुप कभी प्रकट होने वाला नहीं है । भव्यात्माएँ सम्यक्त्व आदि गुणों की प्राप्ति करके इस शुद्ध स्वरुप को प्रकट कर सकती हैं । सम्यक्त्व की प्राप्ति के लक्षण है शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्तिकता ।**

1) शम – शम अर्थात् समताभाव । जगत् के सभी जीवों के प्रति आत्म-तुल्य बुद्धि । स्वयं को प्रिय सुख सभी को प्राप्त हो और स्वयं को अप्रिय दु:ख किसी को भी प्राप्त न हो । इस मनोदशा के साथ जगत् के किसी भी जीवों के साथ शत्रुता का भाव न होना । अपना बुरा करने वाले के प्रति भी मन से भी बुरा विचार न करने की भूमिका शम है ।

2) संवेग – संवेग अर्थात् मोक्ष सुख की अभिलाषा । देव और मनुष्य के सारे सुख क्षणिक है, पुण्य के अधीन है, मात्र दु:ख प्रतिकार स्वरुप है और पाप कर्म के बंधन का कारण है । अत: इन दोषों के कारण समकिती के मन में संसार के भौतिक सुख का कोई आकर्षण नहीं होता । उसे तो एक मात्र मोक्ष सुख को पाने की तीव्र अभिलाषा होती है ।

3) निर्वेद – निर्वेद अर्थात् संसार के प्रति कंटाला । संसार में जीवों को चार गतियों में निरंतर परिभ्रमण करना पडता है । कर्मों के बंधन के कारण जीव को कभी राजा, चक्रवर्ती, देवता और इन्द्र के भौतिक सुख प्राप्त होते है तो कभी दासत्व, दरिद्रता, नरक और तिर्यंच के मरणांत दु:ख प्राप्त होते है । इस कारण से समकिती को इस असार संसार के प्रतिउद्वेग भाव होता है ।

4) अनुकंपा – दुःखी जीव को देखकर हृदय में कंपन होना । अनुकंपा के दो प्रकार i) धन, स्वजन, स्वास्थ्य, जीवनोपयोगी आवश्यक सामग्री से हीन जीवों को देखकर उनके दुःख में स्वयं दुःखी होना वह द्रव्य अनुकंपा है । ii) धर्महीन व्यक्ति चाहे वह चक्रवर्ती हो, राजा हो या इन्द्र हो, उनके भावी भवभ्रमण को देखकर दया करना वह भाव अनुकंपा है ।

5) आस्तिकता – आत्मा, स्वर्ग, नरक, मोक्ष, पुण्य-पाप, कर्म और धर्मसत्ता के अस्तित्व का स्वीकार करना । इन पदार्थों का वास्तविक स्वरुप बताने वाले तीर्थंकर परमात्मा को देव के रुप में स्वीकार करना । कंचन कामिनी के त्यागी, पंचमहाव्रतधारी और तीर्थंकर के द्वारा बताए मोक्ष मार्ग के प्रदर्शक सुसाधु को गुरू के रुप में स्वीकार करना एवं दया प्रधान तीर्थंकर प्ररुपित धर्म को धर्म के रुप में स्वीकार करना ।

सम्यक्त्व के इन पांच लक्षणों से जीव में रहे सम्यक्त्व को पहचाना जा सकता है । इनकी प्राप्ति का क्रम इनके ऊपर निर्दिष्ट क्रम से विपरित है–अर्थात् सबसे पहले आस्तिकता, फिर अनुकंपा, फिर निर्वेद, फिर संवेग और अंत में शम गुण प्राप्त होता है । यह शम गुण आत्मा के भीतर अन्य गुणों को लोहचुंबक की तरह खींचकर आत्मा को समग्र गुणों का भण्डार बनाता है ।

हमारे जीवन की साधना का लक्ष्य समता को पाना होना चाहिए । जीवन में समता आने के बाद–ज्ञानदृष्टि का प्रकाश होता है और ध्यान सृष्टि में प्रवेश होता है ।

बोध में सूक्ष्मता आती है और प्रतिबोध की सक्षमता आती है ।

साक्षी भाव का बसंत आता है और कर्तृत्वभाव का अंत आता है ।

विषयों का संग्रह दूर होता है और विकल्पों का आग्रह दूर होता है ।

पूर्णता पाने की इच्छा होती है और इच्छा की पूर्णता का सुख होता है । धर्मराजा का सूर्योदय होता है और कर्मराजा का सूर्यास्त होता है ।

अव्यवस्था में गंभीरता और हर अवस्था में स्थिरता आती है ।

अशुभ कर्मों का संवर होता है और शुभ कर्मों का स्वयंवर होता है । मात्र उपस्थिति असर करती है और परिस्थिति की असर दूर होती है । जीवों की निंदा चली जाती है और जड पदार्थ की स्पृहा चली जाती है ।

ऐसी समता की प्राप्ति जगत् के सभी जीव प्राप्त कर मोक्ष में जाए यह ग्रंथकारश्री की अंतिम प्रेरणा है ।

प्रस्तुत ग्रंथ के विवेचन में ग्रंथकार के आशय एवं जिनाज्ञा के विरुद्ध कुछ भी लिखा गया हो तो मिच्छा-मि-दुक्कडम् ।

(क्रमशः)

शांत सुधारस

जीवन में शांति का उपाय

विवेचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

मन, वचन और काया की इच्छाओं के विकार से जीवात्मा राग-द्वेष कर कर्म रुपी रज को ग्रहण करती है। उसकी एक चिन्ता दूर होती है, तो उससे भी बढ़कर दूसरी नई चिन्ता खड़ी हो जाती है। प्रतिपल विपत्ति के गर्त के आवर्त में पड़ने के स्वभाव वाले इस प्राणी के लिए इस संसार में किसी भी प्रकार से आपत्ति का अन्त कैसे हो सकता है ?

चिन्ताग्रस्त स्थिति :– इस संसार में अपनी आत्मा अनन्त काल तक निगोद में रही है। जहाँ मात्र एक ही इन्द्रिय होती है। एकेन्द्रिय अवस्था में जीव के पास न तो वाणी होती है और न ही सोचने की शक्ति। फिर क्रमशः अकामनिर्जरा व भवितव्यता के फलस्वरुप आत्मा को बेइन्द्रिय-तेइन्द्रिय-चउरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अवस्था की प्राप्ति होती है।

पंचेन्द्रिय अवस्था में भी अपनी आत्मा बहुत बार पशु अवस्था में रही। वहाँ उसे चेतन मन मिला। कभी-कभी उसे मानव और देव भव की प्राप्ति हुई। किन्तु मानव और देव के भव में भी क्या किया ? मात्र दुर्लभता से प्राप्त मन, वचन और काया की शक्ति का दुरुपयोग ही।

दुर्लभ मन भी सदा विषयों की वासनाओं से ही ग्रस्त बना रहा। कभी धन की वासना जाग उठी, तो कभी पुत्र की वासना, तो कभी भोग की वासना। वासना के जाल में यह मन सदा ग्रस्त बना रहा।

उस महान् कवि ने प्रभु के आगे अपनी वास्तविक स्थिति दर्शाते हुए ठीक ही कहा है-

मैं दान तो दीधुं नहि, ने शीयल पण पाल्यु नहि।
तप थी दमी काया नहि, शुभ भाव पण भाव्यो नहि ॥

वास्तव में, यही अपना भूतकाल रहा है। मन मिला तो वासनाओं का ही निरन्तर चिन्तन किया। तन मिला तो वासनाओं की तुष्टि का ही प्रयास किया। वचन मिला तो विलासितापूर्ण ही वचनप्रयोग किये और इन सबका परिणाम ? निरन्तर क्लिष्टकर्मों का बंध।

इस प्रकार निरन्तर दुष्कर्मों के आसेवन से आत्मा पतन के स्वभाव वाली बनी है। पतन-अभिमुख आत्मा को इस संसार में क्षण भर के लिए भी शान्ति कहाँ है ? उसकी दौड़ सतत चालू है।

संसार-सुख को पाने की तीव्र लालसा के कारण वह सतत चिन्तातुर रहती है । उसकी एक चिन्ता समाप्त नहीं हो पाती है तब तक उसे अन्य चिन्ताएँ लागू पड़ जाती हैं ।

धन की चिन्ता हुई और धन के लिए पुरुषार्थ प्रारम्भ किया । धन की कुछ प्राप्ति हो, तब तक पुत्र की बीमारी की अन्य समस्या खड़ी हो जाती है । पुत्र के स्वास्थ्य के लिए वह दौड़-धूप करता है, वह कुछ ठीक होता है, तब तक तो माँ की मृत्यु के कर्णकटु समाचार उसे सुनने पड़ते हैं और उस शोक में वह डूब जाता है । सतत चिंताओं से ग्रस्त होने के कारण वह जींदा ही जलता रहता है । किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

चिंता चिता से बढ़कर है, घुन लग जाती है ।
चिता मुर्दे को जलाती है, चिंता जीते जी खाती है ॥

इस प्रकार दु:ख के आवर्त में गिरने के स्वभाव वाले इस प्राणी को इस संसार में क्षण भर के लिए भी शान्ति कहाँ से मिल सकती है ?

जीव गन्दगी से भरपूर माँ की कुक्षि रुपी गुफा में सन्तापों को सहन कर जन्म प्राप्त करता है और उसके बाद अनेक प्रकार के महान् कष्टों की परम्परा को प्राप्त करता है, किसी प्रकार से सुखाभासों से जब दु:ख से विराम पाता है, तब मृत्यु की सहचरी जरावस्था उसके देह को खाने लग जाती है ।

संसार सतत दु:ख की परम्परा है

इस संसार के भयंकर कारावास में सुख का क्षण भी कहाँ है ?

इस प्राणी को नरक और निगोद में तो सतत पीड़ा ही पीड़ा है । निगोद में बारम्बार जन्म और मृत्यु की भयंकर पीड़ा । एक दो घड़ी में तो निगोद जीव के 65536 भव हो जाते हैं । अव्यक्त दशा में आत्मा इन सब दु:खों को सहन करती है ।

नरक में व्यक्त रुप से भयंकर वेदना का अनुभव करती है । जन्म भी कुम्भीपाक में । कुम्भीपाक से बाहर निकलने में भयंकर त्रास । तत्पश्चात् परमाधामियों के द्वारा सतत सजा । परमाधामी, नरकजीवों को सतत काटते हैं, भाले से भोंकते हैं, चीरते हैं और नाना प्रकार की पीड़ाएँ देते हैं ।

नरक में क्षेत्रकृत वेदना भी कम नहीं है । अत्यन्त दुर्गन्धमय, अत्यन्त उष्ण और प्रतिकूल क्षेत्र में नरक का जीव सतत दु:ख भोगता रहता है ।

नरक के जीवों को परस्परकृत वेदना भी भयंकर होती है । नरक में रहे मिथ्यादृष्टि जीवों को विभंग ज्ञान होता है, परन्तु उस ज्ञान का उपयोग वे अपने शत्रु को पहचानने में करते हैं और शत्रु को पहचान कर परस्पर लड़ते रहते हैं ।

(क्रमश:)

शासन प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-5 ।

दि. 1 मार्च को श्री आदिनाथ फतेह आई हॉस्पीटल से 10 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री केशवणा पधारे । श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन संघ-केशवणा ने गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री का सामैया किया । जिनालय दर्शन के बाद रामरतनजी (डोम्बीवली) के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । फिर **अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.** के कालधर्म स्थल पर बने त्रिशिखरीय भव्य स्मृति मंदिर में दर्शन एवं दिन भर की स्थिरता श्री कलापूर्ण विहार में हुई ।

दि. 2 मार्च को 5 कि.मी. विहार कर आलासण पधारे । श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर में दर्शन किए । फिर 3 कि.मी. विहार कर रेवतडा पधारे । श्री आदिनाथ त्रिस्तुतिक जैन संघ ने गाजे-बाजे के साथ प्रथम बार पधारे पूज्यश्री का सामैया किया । फिर चौमासी चौदस निमित्त पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन एवं **पूज्य आचार्य भगवंत के संयम सुवर्ण वर्ष की अनुमोदनार्थ** अक्षत वधामणा हुआ । सभा की हार्दिक विनती से दोपहर 3.30 बजे पुनः पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद श्रीसंघ के ट्रस्टी-वसंतभाई (बेंगलोर) ने पूज्यश्री को अधिक से अधिक स्थिरता प्रदान करने की हार्दिक विनती की ।

दि. 3 मार्च को 7 कि.मी. विहार कर सायला पधारे । **श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ त्रिस्तुतिक जैन संघ** एवं गुरुभक्त कैलाशभाई भंडारी ने गाजे-बाजे के साथ प्रथमबार पधारे पूज्यश्री का सामैया किया । फिर 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन एवं **पूज्य आचार्य भगवंत के संयम सुवर्ण वर्ष की अनुमोदार्थ** अक्षत वधामणा हुआ । श्री संघ कि विनती से दोपहर 3.00 बजे आँसुओं की ताकत विषय पर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । दोनों समय लगभग 100 लोगों की उपस्थिति रही । शाम को मंदिरजी में संध्याभक्ति हुई ।

दि. 4 मार्च को **श्री सुपार्श्वनाथ त्रिस्तुतिक जैन संघ-शांतिपुरा सायला** एवं **बालमुनि श्री विमलपुण्य-विजयजी म.सा.** की सांसारिक भुआ-पुष्पाबाई कानराजजी वडेरमुथा परिवार ने पूज्यश्री का सामैया के साथ ही वडेर मुथा परिवार के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । फिर श्रीसंघ की नवकारशी के बाद 10.00 बजे प्रवचन में **पू.मु. श्री शालिभद्र-विजयजी** एवं **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी** का पूज्यश्री के संयम सुवर्ण वर्ष निमित्त गुणानुमोदन प्रवचन हुआ । फिर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद वडेरमुथा परिवार ने पूज्यश्री को कामली अर्पण की । पुनः 3.30 बजे **मु. श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** एवं पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 5 मार्च को 8 कि.मी. विहार कर चौराउ पधारे । श्री धर्मनाथ त्रिस्तुतिक जैन संघ ने गाजे-बाजे के साथ सामैया किया । मंदिरजी में दर्शन के बाद पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद महेन्द्रजी मुथा के गृहांगण में पगले हुए ।

दि. 6 मार्च को 10 कि.मी. विहार कर मेंगलवा पधारे । श्री जैन त्रिस्तुतिक संघ ने गाजे-बाजे के

साथ प्रथमबार पधारे पूज्यश्री का सामैया किया । जिनालय दर्शन के बाद पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । सामुहिक रुप से 50 रुपये की प्रभावना हुई । दोपहर 3.00 बजे गुरुभक्त सुभाषभाई डुंगरमलजी बालगोता-मैसुर के गृहांगण में गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री के पगले हुए । प्रासंगिक प्रवचन के बाद बाबुलालजी मुणोत-तिलोडा-मैसूर ने अपने मनोगत भाव व्यक्त किये ।

दि. 7 मार्च को 3 कि.मी. विहार कर श्री महावीर स्वामी जैन तीर्थ-भाण्डवपुर पधारे ।

जीवाणा में महोत्सव

दि. 8 मार्च को 7 कि.मी. विहार कर जीवाणा पधारे । श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन संघ एवं दीक्षा स्वीकार के बाद प्रथमबार अपनी जन्मभूमि में पधारे **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी** के सांसारिक परिवार **मातुश्री टीपुबाई कलाजी कंकुचोपडा** ने त्रिदिवसीय देव-गुरु भक्ति महोत्सव का आयोजन किया । प्रात: 9.00 बजे साण्डेराव से आये बाबुबेन्ड, गरबा नृत्य मंडली एवं स्थानीय ढोल की रमझट के साथ भव्य सामैया हुआ । मार्ग में कंकुचोपडा परिवार की श्राविकाओं ने मंगल कलशों के साथ पूज्यश्री को प्रदक्षिणा दी । फिर कंकुचोपडा परिवार के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । फिर जिनालय दर्शन के बाद उपाश्रय में धर्मसभा का आयोजन हुआ । बाल कलाकार नमन जैन एवं सिद्धार्थ मुथा ने भाववाही गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए । फिर बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म. ने प्रवचन दिया । अंत में पूज्यश्री ने प्रेरणादायी प्रवचन दिया ।

दोपहर 3.00 बजे मंदिरजी में विविध औषधियों के जल से वर्धमान शक्रस्तव महाभिषेक हुआ । शाम को 8.00 मंदिरजी में महापूजा की गई और मंदिरजी में संध्या भक्ति हुई ।

दि. 9 मार्च को प्रात: 9.30 बजे संगीत के साथ संयम संवेदना का कार्यक्रम हुआ । मुंबई से पधारे चेतनभाई मेहता ने पूज्यश्री के संयम सुवर्ण वर्ष में मंगल प्रवेश की अनुमोदनार्थ पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रसंगों का वर्णन किया । अंत में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

कार्यक्रम के बाद जीतमलजी कलाजी कंकुचोपडा, डाह्यालालजी आदि के गृहांगण में श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले हुए ।

शाम 8.00 बजे मंदिरजी में संध्याभक्ति हुई ।

दि. 10 मार्च को प्रात: 9.30 बजे **पूज्यश्री** एवं **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद कंकुचोपडा परिवार ने पूज्यश्री को अक्षत वधामणा एवं उपकरण वहोराए । दोपहर 2.30 बजे मंदिरजी में भक्ति संगीत के साथ **अंतराय कर्म निवारण पूजा** पढाई गई । शाम 6.30 बजे मंदिरजी में संध्याभक्ति हुई ।

दि. 11 मार्च को बाजे-गाजे के साथ कंकुचोपडा परिवार ने पूज्यश्री को विदाय दी । 10 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री बावतरा में पधारे ।

दि. 12 मार्च को 12 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री सायला पधारे । प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 13 मार्च को 13 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री गोल-उमेदाबाद पधारे । श्री गोल-उमेदाबाद जैन संघ ने 38 वर्ष बाद पधारे पूज्यश्री का गाजे-बाजे के साथ सामैया किया । जिनालय दर्शन के बाद उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद श्री संघ ने पूज्यश्री के संयम जीवन की अनुमोदना करते हुए अक्षत वधामणा किया । प्रवचन के बाद 50 रुपये की प्रभावना हुई ।

दि. 14 मार्च को 14 कि.मी. विहार कर

पूज्यश्री कलापूर्ण विहार धाम-साफाडा पधारे ।

दि. 15 मार्च को 9 कि.मी. विहार कर जालोर पधारे । इतिहास वेत्ता **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री कल्याणविजयजी** की समाधि भूमि-नंदीश्वर द्वीप में दर्शन-वंदन किए । प्रात: 8.30 बजे श्री आदिनाथ पांच शिखरीय जिनालय से श्री चार थुई जैन संघ-जालोर ने गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री का सामैया किया । फिर चार थुई उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 16 मार्च को प्रात: 9.30 बजे **''आँसुओं की ताकत''** विषय पर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद मंच संचालक-तेजसिंहभाई ने सभा को पूज्यश्री का परिचय दिया एवं अंत में सकल संघ ने पूज्यश्री के संयम सुवर्ण वर्ष में मंगल प्रवेश निमित्त अक्षत वधामणा किया । शाम को 5 कि.मी. विहार कर लेटा गांव पधारे ।

दि. 17 मार्च को 12 कि.मी. विहार कर आहोर पधारे । श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन संघ-उपाश्रय में प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । शाम को 5 कि.मी. विहार कर चौपडा विहार धाम-चरली पधारे ।

दि. 18 मार्च को 14 कि.मी. विहार कर श्री सीमंधर स्वामी तीर्थ पधारे ।

दि. 19 मार्च को 7 कि.मी. विहार कर शांति सुशील विहार धाम-तखतगढ पधारे ।

दि. 20 मार्च को 12 कि.मी. विहार कर श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन संघ-बांकली पधारे । प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 21 मार्च को 10 कि.मी. विहार कर श्री अभिनव महावीर-धाम सुमेरपुर पधारे ।

सौभाग्य सुन्दर नवपद महोत्सव

श्री वासुपूज्य स्वामी श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ-भैरु चौक-सुमेरपुर के प्रांगण में **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के **संयम सुवर्ण वर्ष की अनुमोदनार्थ मातुश्री सुन्दरबेन दिनेशकुमारजी रतनपुरा-चौहान-सौभाग्य सुन्दर परिवार** की ओर से चैत्र मास की शाश्वती नवपद ओली निमित्त बडे पैमाने पर नवपदजी ओली के साथ **सौभाग्य सुन्दर नवपद महोत्सव का आयोजन** किया गया ।

दि 22 मार्च को प्रात: 8.00 बजे से महात्मा गांधी चोक से भव्य सामैया का शुभारंभ हुआ । श्रीसंघ एवं चौहान परिवार के श्रावक वर्ग साफा पहनकर आये एवं श्राविकाओं ने मंगल कलश लेकर पूज्यश्री को प्रदक्षिणा दी । फिर भिनमाल से आये खडक ढोल मंडली, डांडिया नृत्य मंडली एवं स्थानिक ढोली की रमझट के साथ नाचते-नाचते गुरु भक्तों ने पूज्यश्री का मंगल प्रवेश कराया । जिनालय दर्शन के बाद श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले सौभाग्य सुंदर परिवार के गृहांगण में हुए । गुलाब पौषध शाला के बाहर तीन पाटो पर विविध धान्यों से गहुली की रचना की गई थी । बडे हर्षोल्लास के साथ पूज्यश्री का गुलाब पौषधशाला में प्रवेश हुआ । मंगलाचरण के बाद आहोर से पधारे संगीतकार उमेशभाई ने गुरु भक्ति गीत प्रस्तुत किया । फिर पूज्यश्री का नवपद ओली निमित्त प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद 50 रुपये की प्रभावना एवं सकल संघ की नवकारशी हुई ।

दि. 23 एवं 24 मार्च को प्रात: 9.00 बजे पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए । दोनों दिन बाहर गांव से लगभग 200 आराधकों का शुभागमन हुआ । सौभाग्य सुंदर परिवार की ओर से स्वागत किया गया । दि. 24 मार्च को शाम 4.30 बजे लगभग 360 आराधकों का उत्तर पारणा हुआ ।

दि. 25 मार्च को नवपद ओली का शुभारंभ हुआ । प्रात: 8.45 बजे हवाला गली में बनी चंपापुरी नगीर हेतु गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री आदि सकल संघ का प्रयाण हुआ । फिर पूज्यश्री के मंगल आशीर्वाद के साथ लाभार्थी जितेन्द्रभाई, दिनेशभाई ने चंपापुरी नगरी का उद्घाटन किया । प्रतिदिन प्रात: प्रवचन, दोपहर के विविध अनुष्ठान एवं संध्या भक्ति का आयोजन चंपापुरी नगरी में हुए ।

प्रतिदिन प्रात: 9.00 से 9.30 बजे तक प्रवचन में प्रारंभ में **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** का **सिरिसिरिवाल ग्रंथ** के आधार पर श्रीपाल महाराजा के जीवन चरित्र पर प्रवचन हुए । फिर **पूज्य आ. श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के श्रीमुख से 9.30 से 10.30 तक नवपद की महिमा पर प्रेरणादायी प्रवचन हुए । एवं 11.00 बजे से 1.00 बजे तक श्रीपाल-मयणा नगरी में सभी आराधकों के आयंबिल हुए ।

आज नवपद ओली के प्रथम दिन दोपहर 2.30 बजे ऋषभ कथा का आयोजन हुआ । बडोदा से आये यतीतभाई आदि कलाकारों ने नृत्य भक्ति प्रस्तुत की । शाम 8.30 बजे अमदावाद से आये बाल कलाकार सिद्धार्थ मुथा ने संध्या भक्ति की रमझट मचाई ।

दि. 26 मार्च को प्रात: 8.45 बजे चंपानगरी के बाहर बनाई जीवंत रंगोली का उद्घाटन हुआ । छह रंगोली में **1. पू.आचार्य श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी, 2. पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा., 3. पू.आ. श्री कीर्तियशसूरीश्वरजी म.सा. 4. पू.आ. श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. 5. पू.सा. श्री चैतन्यरेखाश्रीजी (माताजी म.सा.) 6. दिनेशभाई धरमचंदजी चौहान (पिताजी)** की मुखाकृति की आबेहुब रंगोली बनाई गई ।

उद्घाटन के बाद धर्मसभा में प्रवचन हुआ । दोपहर 2.30 बजे **पूज्य आचार्य श्री विजय मोक्षरतिसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा रचित अठारह पापस्थानक निवारण पूजा एवं संवेदना का आयोजन हुआ । फालना से पधारे संगीतकार दीपक गोयल ने शास्त्रीय संगीत में पूजा के गीतों का गान कर सभी को मंत्रमुग्ध किया एवं शाम 8.00 बजे भक्ति संगीत की रमझट मचाई ।

दि. 27 मार्च को प्रात: 9 से 10.30 बजे तक धर्म सभा में प्रवचन हुए ।

दोपहर 3.00 बजे भक्ति संगीत के साथ भावाचार्य वंदना का कार्यक्रम हुआ । अमदाबाद से पधारे केतुलभाई शाह ने पूर्वाचार्यों के जीवन पर मार्मिक संवेदनाएँ प्रस्तुत की । अंत में पूज्यश्री का प्रासंगिक प्रवचन हुआ । इस प्रसंग पर सकल संघ ने पूज्यश्री को प्रदक्षिणा देकर आचार्य पद का सम्मान किया एवं पूज्यश्री को गुरुपद पर स्थापित किया । शाम 8.00 बजे श्री संघ के युवा कार्यकर्ताओं ने भक्ति संगीत की रमझट मचाई ।

दि. 28 मार्च का प्रात: 9.00 बजे धर्मसभा में प्रवचन हुए । दोपहर 2.30 बजे भक्तिसंगीत के साथ **शत्रुंजय एवं गिरनार महातीर्थ** की भावयात्रा का कार्यक्रम हुआ । सुरत से पधारे मोन्टुभाई जैन ने दोनों तीर्थों की महिमा बताई । संगीतकार उमेशभाई ने सभा को भक्ति संगीत में जोडा । दोनों तीर्थ के बेनर के समक्ष 10 फिट बडी गहुँली एवं मांडला बनाया गया । शाम को 8.00 बजे संध्या भक्ति में दिलीप बाफना ने भक्ति संगीत की रमझट मचाई ।

दि. 29 मार्च को साधु पद की आराधना के साथ पूज्यश्री के संयम सुवर्णवर्ष की अनुमोदनार्थ प्रात: 9.00 बजे धर्मसभा में **मुनिश्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** एवं **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** ने पूज्यश्री के जीवन प्रसंगों का वर्णन करते हुए गुणानुवाद किया । फिर पूज्यश्री का साधु पद की महिमा पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दोपहर 2.00 बजे भक्ति संगीत के साथ संयम संवेदना एवं पुस्तक विमोचन का कार्यक्रम हुआ । चंपापुरी नगरी में मंच पर 50 किलो अक्षत से रजोहरण की गहुँली बनाई गई । मंच संचालन मोन्टुभाई जैन एवं संगीतकार महेन्द्रभाई भट्ट-पाली ने सभा को भाव विभोर किया ।

प्रारंभ में सिरोही क्षेत्र के भूतपूर्व विधायक–संयमजी लोढा, श्री संघ अध्यक्ष-पोपटलालजी जैन, पींकुभाई आदि ने ज्ञानदीप प्रज्वलन किया । रणजीतभाई पिताणी-भारुंदा, प्रकाशभाई, दाडमजी आदि ने **पूज्य आ.श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** एवं **पूज्य पं.श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** की तस्वीरों पर माल्यार्पण किया । इस प्रसंग पर **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म.सा.** ने पूज्यश्री द्वारा आलिखित **272 पुस्तकों** के नाम कंठस्थ कर, धारा प्रवाह में बोलकर सभा को मंत्रमुग्ध किया ।

फिर पूज्यश्री द्वारा आलिखित **271 एवं 272 वीं पुस्तक हृदय प्रदीप भाग-1** एवं **भाग-2** का विमोचन संयमजी लोढा, पिंकुभाई, जितेन्द्रभाई, पोपटभाई, विपुलभाई रुपावत, प्रदीपभाई, प्रकाशभाई, सुरेन्द्रजी लुणिया, प्रदीप मेहता आदि ने करके पूज्यश्री को अर्पण की ।

प्रसंग के विशेष अतिथि राजस्थान सरकार के पशुपालन एवं देवस्थान मंत्री जोरारामजी कुमावत ने अपनी व्यस्तता में भी समय निकाल कर पूज्यश्री को वंदन करने पधारे । अक्षत वधामणा करते हुए उन्होंने पूज्यश्री को संयम जीवन की बधाई दी । अपने मनोगत भाव को व्यक्त करते हुए उन्होंने जीवदया के क्षेत्र में हो रहे जैन समाज के योगदान की प्रशंसा की ।

अंत में लाभार्थी परिवार ने पूज्यश्री को 50 किलो अक्षत से वधामणा की एवं जितेन्द्रभाई चौहान ने अपने मनोगत भाव प्रस्तुत करते हुए पूज्यश्री को अपने माता-पिताजी के प्रारंभिक संस्कार दाता गुरुदेव के रुप में बताते हुए कृतज्ञता व्यक्त की ।

शाम को 8.00 बजे संध्या भक्ति में महेन्द्रभाई भट्ट ने भक्ति संगीत की रमझट मचाई ।

दि. 30 मार्च को प्रात: 9.00 बजे धर्मसभा में प्रवचन हुए । दोपहर 3.00 बजे विविध औषधियों से मिश्रित जल से वर्धमान शक्रस्तव महाभिषेक का आयोजन हुआ । मुंबई से पधारे संगीतकार हेनीभाई जैन से विविध शास्त्रीय रागों में शक्रस्तव महास्तोत्र का गान किया । प्रभुजी के आगे 30 फुट का भव्य मांडला बनाया गया । शाम को 8.30 बजे संध्याभक्ति में हेनीभाई ने भक्ति संगीत की रमझट मचाई ।

दि. 31 मार्च को शासनपति श्री महावीर स्वामी प्रभुजी के 2624 वें जन्म कल्याणक निमित्त प्रात: 8.30 बजे श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय भैरु चौक से भव्य वरघोडा प्रारंभ हुआ । महेश बेन्ड-सुमेरपुर, शहनाई वादक एवं स्थानिक ढोल की रमझट के साथ नाचते-झूमते प्रभु भक्तों ने वरघोडे की शोभा बढाई । मार्ग में श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय उंदरी के दर्शन कर प्रात: 10.00 बजे श्री अभिनव महावीर जैन तीर्थ धाम में वरघोडा संपन्न हुआ । जिनालय दर्शन के बाद शांतिजीवी हॉल में पूज्यश्री का भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित्र पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । वरघोडे में जुडे समस्त जैन संघ का स्वामीवात्सल्य हुआ ।

दोपहर 3.00 बजे चंपापुरी नगरी में भगवान महावीर को पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ । पाठशाला की नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं ने 14 स्वप्न दर्शन का कार्यक्रम किया । बाद में लाभार्थी परिवार ने श्रीसंघ को भगवान महावीर स्वामी के जन्म की बधाई देते हुए प्रभुजी का पालना झुलाया । संगीतकार हेनीभाई ने मधुर राग में श्री दीपविजयजी द्वारा रचित हालरडा का गान किया । शाम 8.30 बजे संध्याभक्ति हुई ।

दि. 1 अप्रेल को प्रात: 9.00 बजे चंपापुरी नगरी में प्रवचन हुए । प्रवचन के बाद बडगांव जैन संघ के अध्यक्ष एवं गत वर्ष के नवपद ओली के लाभार्थी शा. तेजराजजी कोठारी ने पूज्यश्री को बडगाँव में आयोजित ध्वजारोहण महोत्सव में निश्रा प्रदान करने हेतु पूज्यश्री को हार्दिक विनती की एवं गतवर्ष की ओली के आयोजन से उन्हें हुए आत्मिक लाभ का वर्णन किया । सौभाग्य सुंदर परिवार की ओर से उनका एवं साथ में पधारे प्रवीणभाई दोशी एवं वसंतभाई कावेडिया (फतापुरा) का बहुमान किया गया । तेजराजजी कोठारी की ओर से आयंबिल के तपस्विओं को 100 रुपये की प्रभावना दी गई । दोपहर 2.30 बजे चारित्र-उपकरण वंदनावली का कार्यक्रम हुआ । साधु जीवन के मुख्य उपकरणों की स्तुतिओं के सामुहिक गान पूर्वक प्रत्येक उपकरणों का महत्त्व पूज्यश्री ने अपने प्रवचन द्वारा बताया । आयोजक परिवार के सदस्यों ने सभा को एक-एक उपकरणों का दर्शन कराया । अंत में आयोजक परिवार ने सकल संघ को अक्षत से बधाया । शाम को पक्खी प्रतिक्रमण की आराधना हुई । फिर 9.00 बजे संध्या भक्ति हुई ।

दि. 2 अप्रेल को चैत्री पूनम के निमित्त प्रात: 8.30 बजे से शांति भवन में सकल संघ के सामूहिक देववंदन हुए । दोपहर 3.00 बजे गुलाब पौषध शाला में पुरुषों के लिए पूज्यश्री का तप धर्म की महिमा विषय पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । एवं चंपापुरी नगरी में बहनों के लिए गांव सांझी का आयोजन हुआ । जिसमें 650 बहनों ने भाग लिया । सभी को 100 रुपये की प्रभावना दी गई । शाम 8.30 बजे संध्या भक्ति हुई । **अंत में वासुपूज्यस्वामी श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ की ओर से नवपद ओली आयोजक मातुश्री सुंदरबेन दिनेशकुमारजी धर्मचंदजी-रत्नपुरा चौहान-सौभाग्य सुंदर परिवार का बहुमान किया गया ।**

दि. 3 अप्रेल को प्रात: 8.00 बजे से श्रीपाल-मयणा आयंबिल मंडप में नवपद ओली के तपस्विओं का पारणा हुआ । प्रारंभ में पूज्यश्री का मांगलिक एवं प्रासंगिक प्रवचन हुआ । फिर नवपद ओली के 350 तपस्विओं को भक्ति से पारणा कराया गया । सभी आराधकों को सौभाग्य सुंदर परिवार की ओर से 1501 रुपये की प्रभावना, नवपद आराधना संपूट, बाहर गांव से पधारे हुए आराधकों को 1000 रुपये रेल्वे चार्ज एवं भाता भेट दिया गया तथा श्री संघ में हुए सामुहिक प्रभावना फंड मे से सभी आराधकों को 1100 रुपये की प्रभावना दी गई । ओली दरम्यान प्रतिदिन आयोजक परिवार की ओर से प्रवचन बाद, दोपहर के कार्यक्रम बाद एवं रात्रि भक्ति में सभी को तीनों टाइम 20-20 रुपये की प्रभावना दी गई ।

सुमेरपुर के पिछले 100 वर्षों के इतिहास में सौभाग्य सुंदर परिवार की ओर से आयोजित इस नवपद ओली में जो उदारता पूर्वक लाभ लिया वह पूरे गोडवाड में प्रशंसनीय है । मारवाड के एक छोटे से गांव में इतने बडे पैमाने में नवपद ओली का आयोजन कर एक बडा इतिहास रचा है ।

आगामी कार्यक्रम

दि. 24-25-26 अप्रेल–फालना में ध्वजा महोत्सव ।

दि. 29 अप्रेल से 3 मई बडगांव में ध्वजा महोत्सव ।

'सूरि प्रेम' की जन्मभूमि पिंडवाडा में चातुर्मास प्रवेश दि. 19 जुलाई, रविवार

पूज्यश्री से संपर्क सूत्र सेवक सहदेव के M.No. 98672 04942

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

प्रवचन हेतु प्रयाण

ऋषभ कथा में जितेन्द्रभाई

प्रभु महावीर जन्म कल्याणक वरघोडा

मांगलिक श्रवण

सुखशाता पुछते मनीषभाई

प्रशांतमुद्रा में पूज्यश्री

गुरुपूजन करते चेतनभाई

अक्षत वधामणा

उपस्थित जनमेदिनी

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

From :

To,

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4, Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E), Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN